॥ ओ३म् ॥

नरक की रिपोर्ट

लेखक व प्रकाशक—

चतुरसेन गुप्त

आचार्य धर्मपाल आर्य

मुद्रक तथा प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, दिल्ली-७

प्रथमवार २०००]   माघ २०१६ वि०   [मूल्य ४ आने

विषय-सूची

१—नरकाधिपति का दरबार, और नरकाधिपति द्वारा नरक की रिपोर्ट तय्यार करने का आदेश
२—वैद्य लोग ३
३—हकीम जी ७
४—चुनाव शूर ८
५—चटोरे ९
६—भाल बाबू
७—डाकखाने वाले
८—वकील ११
९—न्यायाधीश
१०—न्यायालयों में काम करने वाले
११—पत्रकार
१२—सिफारशी
१३—जमानती
१४—ओथ कमिश्नर
१५—बोल चाल में अनैतिकता
१६—मिलावट करने वाले
१७—घी में मिलावट
१८—पंसारी और पापड़ वाले
१९—दूध वाले और दूधिये
२०—वस्त्र निर्माता
२१—वाक् शूर
२२—लेखक गण
२३—प्रकाशक गण
२४—धक्का देने वाले
२५—लीडर या शासक
२६—अध्यापक गण
२७—परिवार नियोजक
२८—डाक्टर गण

Scanned with CamScanner

ओ३म्

नरक की रिपोर्ट

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी नरक चतुर्दशी के नाम से विख्यात है इसी दिन नरकाधिपति यमराज महाराज प्रति वर्ष अपना वार्षिक दरबार करते हैं। सदा की भांति गत वर्ष भी नरकाधिपति यमराज ने नरकपुरी की राजधानी में दरबार किया। दरबारियों, कर्मचारियों और अगणित यमदूतों से दरबार खचाखच भरा हुआ था। तिल धरने को भी जगह नहीं थी। दरबार हाल के चारों ओर भयंकर भीड़ भाड़ हो रही थी। धक्कम धक्का और सिर फुटौव्वल तक की नौबत आ गई थी, गुलगपाड़ा तो इतना अधिक था कि यमराज महाराज को दरबार हाल में दरबार करना कठिन हो गया।

यमराज महाराज ने अपने दूतों को डाटडपट करते हुए पूछा कि यह गुल गपाड़ा क्यों हो रहा है। हमारे जीवन में यह पहिला ही अवसर है कि दरबार के दिन इतनी भीड और कर्णबेधक शोर हो रहा है।

यमराज महाराज की डाट डपट के कारण दरबार में सन्नाटा सा छा गया, कुछ शान्ति हुई। नरकराज के मुख्य लेखक चित्र गुप्त ने अभिवादन करने के अनन्तर नरकराज महाराज से निवेदन किया।

भगवन्! मृत्युलोक निवासियों में अधर्म, अन्याय, अत्याचार, पापाचार, अनाचार, व्यभिचार, दुराचार, काम, क्रोध लोभ मोह

Scanned with CamScanner

लालच अहंकार छल कपट, भीष ईर्षा द्वेष इतना बढ़ गया और दिनों दिन बढ़ता जा रहा है कि जिसके कारण श्री महाराज के नरकधाम में भयंकर भीड़ हो गई है। मुझे और मेरे सभी साथी कर्मचारियों को दिन रात यही चिन्ता सता रही है कि यदि मृत्युलोक निवासियों के आचरण का दिन प्रति दिन इसी प्रकार ह्रास होता रहा तो नरकधाम तो साक्षात ही नरक बन जावेगा। अब या तो धर्म राज जी से स्वर्गधाम को किराए पर लेना पड़ेगा अथवा धर्मराज जी कब तक अपने स्वर्गधाम में निठल्ले पड़े मक्खी मारते रहेंगे उन्हें तो भागना ही पड़ेगा। अतः आप अपने व्यक्तिगत प्रभाव से श्री धर्मराज जी से मिलकर उनके स्वर्गधाम को तुरन्त प्राप्त कर लें। यह हो सकता है कि श्री धर्मराज जी अपने स्वर्गधाम को नरक धाम बनाना पसंद न करें और इसके लिए इन्कार कर दें किन्तु यदि उन्होंने इन्कार कर भी दिया तो क्या ! आज तो जैसे मृत्युलोक में न्याय अन्याय की कोई कसौटी नहीं केवल बहुमत– (चाहे वो मूर्खों का ही क्यों ना हो) के बल पर धनियों का धन, जमीदारों की जमीन, राजाओं के राज्य, मील वालों के मील, व्यापारियों के व्यापार, तथा मकानदारों के मकानों पर कब्जा कर लिया जाता है उसी प्रकार माननीय यमराज जी ! अब तो नरकधाम में आप का भारी बहुमत है, बहुमत के बल पर स्वर्गधाम पर कब्जा करके उसे नरकधाम में मिला लें। बेचारे धर्मराज जी बिगाड़ ही क्या सकते हैं जैसे मृत्युलोक में बहुमत के नेताओं की एक घुड़की में ५७१ नरेश राज्य छोड़कर भाग गये वैसे ही यह बिचारे धर्मराज जी भी दुम दबा कर चलते बनेंगे।

चित्र गुप्त के इस प्रस्ताव का यमराज के मन पर बुरा प्रभाव

पड़ा और गम्भीर मुद्रा में बोले ! चित्र गुप्त जी ! ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मृत्युलोक में जेल वालों की आदतें अपराधियों जैसी हो जाती हैं वैसे ही प्रतीत होता है कि आप की आदत भी नरक में आने वालों की सो हो गई है तभी तो आप ने हमको भी मृत्युलोक वालों का उदाहरण देकर इन नरकवासियों के बहुमत पर स्वर्गधाम पर कब्जा कर लेने की सलाह दी है। यह सलाह सर्वथा अनुचित, सोलह आने निकम्मी और नास्तिकता पूर्ण है और इसी विचार धारा के कारण हमारे नरकधाम में भयंकर भीड़ भाड़ हो रही है।

देखो ! चित्र गुप्त जी ! हमारा नाम यमराज है यम कहते हैं न्याय करने वाली शक्ति को ! अतः हमें अपने न्याय के आधार पर ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि जिस से हमारे नरकधाम में आये हुये प्राणियों का सुधार हो,साथ ही मृत्युलोक के प्राणियों को ऐसा सन्मार्ग दिखाया जाय जिससे उन्हें हमारे नरकधाम में आने का अवसर ही प्राप्त न हो। भला यह भी कोई न्याय की बात है कि हम इन नारकीय प्राणियों के बहुमत को लेकर बेचारे स्वर्गाधिपति धर्मराज महाराज को खदेडदें। यदि हम भी ऐसा ही करने लगेंगे तो फिर मृत्युलोक निवासी यमराजों में और हम में क्या अन्तर रहेगा।

अतःसुनो चित्र गुप्त जी! धर्म राज महाराज के स्वर्गधाम छीनने का फिक्र छोड़कर अपने नरकधाम में आने वाली भीड़ की रोक थाम पर ध्यान देना ही उचित मार्ग है इसी में मृत्युलोक का ही क्या सभी लोक लोकान्तरों का कल्याण है। इस सम्बन्ध में मेरी बात को ध्यान देकर सुनो और तुरन्त ही उस पर आचरण करो।

चित्रगुप्त जी ने अपने अन्नदाता यमराज महाराज से अपने

नास्तिक विचारों के लिए उसी प्रकार क्षमा याचना की जिस प्रकार पुरुषोत्तम भगवान् राम के सामने उनके मन्त्री जाबाली ने नास्तिकता पूर्ण विचार रखने पर की थी । चित्रगुप्त जी ने प्रार्थना की, भगवन्! जो उपाय आप उचित समझें—आज्ञा करें तुरन्त पालन किया जायगा ।

यमराज महाराज ने कहा कि मृत्युलोक से जितनी आत्माएं चली आ रही हैं अथवा जो पहले से ही यहां उपस्थित हैं उनके अभियोगों की फाईलें निकाल कर देखो, जिन-जिन कर्मों के कारण उन्हें यहां नरक लोक में आना पड़ा है उन-उन प्राणियों की एक ऐसी रिपोर्ट तय्यार करो जैसी मृत्यु लोक में प्रतिमास A. I. R. छपती है जिनमें सर्वोच्च न्यायालयों द्वारा अभियोगों के निर्णय छपते हैं और फिर सदा के लिए उदाहरण का काम देते हैं । प्रत्येक मनुष्य उससे यह जान लेता है कि अमुक अभियोग के कारण यह दण्ड भोगना पड़ेगा । अतः इसी प्रकार की एक रिपोर्ट लिख कर मृत्युलोक में प्रकाशित करने के लिए शामली निवासी चतुरसेन गुप्त के पास भेज देनी चाहिए । इस रिपोर्ट से मृत्यु लोक के प्राणी भली प्रकार समझ सकेंगे कि अमुक अमुक पापों, कुकर्मों और अनाचारों के कारण नरक की यातनाएं भोगनी पड़ती हैं । इसका मानव प्राणियों पर ऐसा प्रभाव पड़ सकता है कि जिससे वे नरक में जाने वाले कुकर्मों में फंसने से बच सकें । इस प्रकार नरक में भीड़-भाड़ आप ही आप कम हो जावेगी ।

नरकराज महाराज के आदेश को चित्रगुप्त जी ने शीश झुकाकर स्वीकार करते हुए निवेदन किया कि भगवन!जिस चतुरसेनगुप्त के पास रिपोर्ट भेजने की आपने आज्ञा प्रदान की है उसके कर्मों की फाईल तो यहां आन पहुंची हैं इसकी फाईल के अध्ययन से पता

Scanned with CamScanner

चलता है कि यह तो सीधा ही यहां प्रावेगा । (हंसी) नरकाधिपति को यह सूचना देकर नरक में माने वाले प्राणियों की मिसलों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने और नरक की रिपोर्ट का सम्पादन करने में श्री चित्रगुप्त जी जुट गए ।

चित्रगुप्त जी ने नरकवासी आत्माओं के लेखे-जोखे देख-देख कर प्रत्येक का संक्षिप्त सारांश लिखकर तय्यार किया । नरक में वास करने वाली करोड़ों आत्माएं हैं उन सब के कर्मों के वर्णन करने में तो पुस्तक के करोड़ों ही पृष्ठ चाहिएं । फिर करोड़ों पृष्ठों को पढ़ेगा भी कौन ? अतः कुछेक आत्माओं का संक्षिप्त वर्णन ही इस समय पर्याप्त होगा । शेष फिर आवश्यकतानुसार छपता रहेगा ।

अब श्री चित्रगुप्त जी महाराज द्वारा तय्यार की गई नरक की रिपोर्ट का पढ़ना प्रारम्भ करें किन्तु पढ़ने के साथ-साथ आप अपने कर्मों का भी मिलान करते जांय जिससे आप अपने को सुधार कर नरक गामी बनने से बच सकें ।

वैद्य लोग

हमारे नरक धाम में बहुत से वैद्य पधारे हैं इनमें एक श्री कुल भूषण जी हैं । यह बड़े ही कुशल वैद्य थे किन्तु यह अत्यन्त लोभी भी थे । वैद्य के लिए लोभ बड़ा खतरनाक है, वैद्य के हाथ में मानव के प्राण होते है । लोभ और जीवन यह एक साथ नहीं चल सकते, लोभ और मृत्यु का तो साथ ही है । एक दिन इन वैद्य जी के पास एक रोगी आया वैद्य जी ने निदान करके कहा कि तुम्हें एक हल्का सा जुलाब लेना चाहिए और जुलाब के लिए अरंडी के तेल की एक मात्रा पर्याप्त है । आज रात्रि में दूध के साथ १ तोला अरंडी के तेल का सेवन करो ।

Scanned with CamScanner

रोगी ने कहा बहुत अच्छा, मेरे पास बहुत स्वच्छ अंरडी का तेल है आज उसका ही प्रयोग करूंगा, यह कह कर रोगी चलने लगा तब वैद्य जी के मन पर लोभ सवार हुआ और सोचने लगे कि इस रोगी से कुछ पैसा तो मिला ही नहीं। झट बदले और बोले देखो, यह दो गोली हैं आज इन्हें ही गर्म जल के साथ लेना। हलके से जुलाब के स्थान पर वह तेज गोली देदी, रोगी को जुलाबों ने परेशान कर दिया, और उसे हस्पताल में दाखिल होना पड़ा।

दो आने के लोभ ने रोगी को मरण शय्या पर डाल दिया। लोभ से पाप उत्पन्न होता है। बस इस पाप ने ही वैद्य जी को हमारे नरक धाम में धकेल दिया। यदि इनमें यह लोभ की मात्रा न होती तो वास्तव में यह वैद्य जी महाराज स्वर्गीय सुख का आनन्द भोगते। अतः वैद्य को तो लोभी होना ही नहीं चाहिए।

माननीय श्री यमराज जी! मृत्यु लोक में एक संस्कृत के विद्वान् ने ऐसे लोभी वैद्यों को आपका भाई बताते हुए ठीक ही कहा है। :—

वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराज सहोदरः।
यमस्तु हरति प्राणः वैद्य प्राण धनानि चः॥

अर्थात् हे यमराज के सहोदर भाई वैद्यराज जी! आपको नमस्कार है यमराज जी तो केवल प्राण ही हरते हैं किन्तु हे वैद्यराज जी! आप तो प्राण और धन दोनों का हरण कर बैठते हो।

इसी प्रकार हमारे नरक धाम में हजारों की संख्या में-

हकीम जी

धड़ाधड़ आ रहे हैं। इन्हें [illegible] नुसखों पर विश्वास नहीं

Scanned with CamScanner

रहा। ये लोग भी बिना जाने ही रोगियों को इन्जेक्सन लगाते रहते हैं। इनके लगे हुए इन्जेक्सन से रोगी तड़फते और मरते रहते हैं। अधिकतर हकीमों के यहां आने का कारण यह है कि इन्होंने युवकों के जीवन के साथ खिलवाड़ करने के लिए अनेक प्रकार के ताकत के तिले और गोलिए इजाद की हुई हैं जिससे युवकों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

चुनाव शर

मान्य श्री नरकाधिपति जी! आपके नरक धाम में सबसे अधिक भीड है मृत्यु लोक में चुनाव लड़ने वालों की। चुनाव जीतने और हारने वाले सभी यहां उपस्थित हैं। चूंकि अब मृत्युलोक में जन-गण राज्यों का जोर हो रहा है एक तन्त्र राज्य समाप्त है इस लिये प्रत्येक प्राणी को राज्य पाने की उत्कण्ठा तथा अभिलाषा रहती है और इसके लिए आए दिन चुनाव लड़ना इनका आवश्यक पेशा हो गया है। मृत्युलोक में आये दिन जो चुनाव होते रहते हैं उनमें मुख्य हैं—सरकारी ग्राम पंचायतों के चुनाव, नगर पालिकाओं के चुनाव, जिला बोर्ड के चुनाव, फिर प्रान्तीय धारा सभाओं के चुनाव, उनमें भी अपर हाऊस के चुनाव, पार्लीमेंन्ट के चुनाव फिर अवैध चुनाव ती वर्ष भर होते हो रहते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में प्रति दिन स्थानीय कांग्रेस के चुनाव, मंडल के चुनाव, प्रान्त के चुनाव, सभा समिति के चुनाव, फिर जन संघ के चुनाव, प्रजा सोशलिष्ट पार्टी के चुनाव, कम्युनिष्ट पार्टी के चुनाव, कालेज आदि शिक्षा संस्थाओं में चनाव, मिलों में चुनाव, हिन्दु महा सभा के चुनाव तथा धार्मिक संस्थाओं में सिक्खों के सिर फुटब्बल तो देखते ही बनते हैं और आर्य समाज तो चुनाव के पुराने रोग में फंसा हुआ

जर्जरित हो रहा है। चुनाव से पहले सदस्य बनाये जाते है बस यहीं से नैतिक पतन का श्री गणेश होता है।

कोई भी मनुष्य कितना ही योग्य हो, सच्चा हो, सज्जन हो वह भी चुनाव जीतने की लालसा से उचित अनुचित उपायों का सहारा ले बैठता है। जब श्रेष्ठ लोगों की यह दशा है तो फिर जो जन्मजात ४२० है उनका तो कहना ही क्या ? ऐसे लोग बहुत हैं जो चुनाव जीतने के लिए जनता में लच्छेदार भाषण देते हैं, झूठ, कपट, मक्कारी, चालाकी और धोखे में जनता को डालकर अपना उल्लू सीधा करते है। चुनाव जितने पर फिर इनकी ओर से जनता जाय चूल्हे में या भाड़ में, इनका तो अपना काम निकल ही गया।

इस प्रकार चुनाव लड़ने वाले और उनके सलाहकार तथा साथी कोई भी व्यक्ति नरक धाम की यात्रा से न बच सका है और न बच सकेगा। यह नितान्त सत्य है कि इस चुनाव प्रणाली ने मानव समाज को नीचे से नीचे स्तर पर खड़ा कर दिया है। हर प्रकार की बेईमानी, धोखाधड़ी, मक्कारी, अन्याय, पाप, अत्याचार और घृणित से घृणित पाप भी सभी मानव जीवन में घर कर गई हैं। जब तक मृत्यु लोक वाले इस चुनाव प्रणाली से छुटकारा या इसको संक्षिप्त नहीं करेंगे तब तक नैतिक उत्थान सम्भव नहीं और नैतिक पतन के कारण नरकधाम में भीड़ कम नहीं हो सकेगी

यह तो रही चुनाव लड़ने वालों की बातें। अब चुनाव की समाप्ति पर छल कपट की जो घटनाएँ होती हैं वह सुनिये। चुनाव कानून के अनुसार जीतने और हारने वालों को चुनाव के खर्च का हिसाब सरकार को दिखाना पड़ता है। इस हिसाब के बनाने में पूरी-पूरी बेईमानी का सहारा लिया जाता है क्योंकि खर्च करते हैं अधिक

ग्रौर कानून द्वारा होना चाहिये कम। बस इस कानून के चक्कर में बिचारे चुनाव शूर हिसाब देते समय भी छल प्रपंच का सहारा लेते रहते है। यदि मृत्यु लोक के विधान शास्त्री, चुनावशूरों से हिसाब लेने का कानून समाप्त करदें तो नैतिक गिरावट में कुछ न कुछ कमी हो सकेगी फिर नरक की भीड़ में भी कमी हो सकेगी।

चटोरे

माननीय यमराज जी ! नरकधाम में चटोरों की भी भारी भीड़ है। यह लोग वे हैं जिन्हें ग्रपनी जिह्वा पर काबू नहीं है। बाजार में जिस वस्तु पर लार टपकी- झट खरीदा खा लिया। यदि जेब में पैसे नहीं तो उधार ही सही। उधर परिवार के सदस्य गण इस प्रतीक्षा में रहते हैं कि हमारे पालक बाजार से ग्रावेंगे कोई खाने पीने की वस्तु लावेंगे परन्तु इन बेचारों को क्या पता कि यह चटोरे हैं बाजार में ही चट कर जाते हैं। इन लोगों की इसी ग्रादत ने इन्हें नरक में ग्राने पर विवश किया है।

माल बाबू

श्रीमान् जी ! मृत्युलोक में रेलवे स्टेशनों पर सरकारी कर्म चारियों में मालबाबू भी होते हैं। जो रेल बाबुग्रों से मिले रहते हैं रिश्वत में हिस्सा बांट लिया करते हैं इनका काम माल की बिलटी बनाना ग्रौर बिलटी का माल छोड़ना है इसी लिये यह माल बाबू कहलाते हैं। यह मालबाबूजी ग्रधिकांश में बिना रिश्वत लिए न बिलटी बनाते हैं ग्रौर न बिलटी का माल देते हैं। हमारे नरकधाम में इन माल बाबुग्रों की ग्रच्छी खासी भीड़ है।

डाकखाने वाले

माननीय यमराज जी ! ग्रापकी नरकपुरी में सब से कम भीड़

Scanned with CamScanner

है छकवाने वालों की । कोई एक पाप ... का ... सकता है किन्तु अब कुछ वर्षों से इस विभाग के लोग पहले की अपेक्षा अब अधिक आने लगे हैं।

वकील

माननीय नरकराज जी ! पाप की नरकपुरी में मृत्युलोक से आने वाले वकीलों का भी भारी जमघट है। यद्यपि इनका पेशा है एक दुखी को सरकार से न्याय दिलाना। जनता, नेता और न्याया-धीश को न्याय मार्ग दिखाना तथापि न्याय के स्थान में यह अन्याय और अन्यायी को प्राय: प्रोत्साहन देते रहते हैं। जान बूझकर झूठे मुकदमें लेते हैं और मुकदमा जीतने के लिए अपने मुवक्किल से जब ऐसे के लिए नानाप्रकार की चाल बाजी स्वयं करते हैं और मुवक्किल से कराते रहते हैं। यदि यह वकील लोग झूठे मुकदमे लेने छोड़ दें तो मृत्युलोक में पाप और अन्याय में भारी कमी हो जाय किन्तु ऐसा होना कठिन है। हां यदि मृत्युलोक की न्याय संहिता में कोई ऐसी धारा जोड़ दी जाय जिसके कारण झूठे मुक-दमे की पैरवी करने पर वकील भी दण्डित हो सकता हो तो वकील लोग झूठे मुकदमे लेने बन्द कर देंगे फिर अनायास ही मुकदमे बाजी कम हो जावेगी और फिर वकीलों के लिए अपने नरकधाम में प्रबन्ध करने की आवश्यकता न पड़ेगी। जिन कर्मों के कारण वकील लोग यहां नरकधाम में पधारे हैं थोड़ा सा विवरण एक ही वकील साहब की कारगुज़ारी का सुनिए:—

१. वकालत चमकाने के लिए धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक पार्टियों में सबसे आगे बढ़ २ कर भाग लेते थे। पक्के पार्टी बाज और पार्टी बाजी के बल पर किसी को गिराना और बढ़ा-

ना इनका काम रहा है।

कभी-कभी दो झगड़ालु में पंच भी बनते रहते थे और पार्टी बाजी की गन्ध में अन्धे होकर झूठे निर्णय देते थे।

३. अपने मुवक्किल को प्रारम्भ में विश्वास देते कि तुम जीत जावोगे, मैं तुम्हें जिता दूंगा। जज तो मेरा अपना है। भारी फीस लेते ही झट आखें बदल लेते और कह देते कि भाई तुम्हारे केस में जान नहीं। फैसला कर लो। कोई आश्चर्य नहीं कि कहीं तुम्हें ही सजा न हो जाय। ऐसा कहकर फिर उससे रुपया ऐंठना ही इनका काम था।

४. पेशी होने पर मुवक्किल को फूटी आँखों भी देखना पसंद नहीं करते थे। बात बात पर उसे बुरा भला कहने में नहीं चूकते।

५. प्रति पक्षी से मिलकर भी रुपया खा जाते थे।

ऐसी तथा अन्य प्रकार की घटनायें वकीलों में पाई जाती हैं। इतना तो स्पष्ट है कि झूठ बोलना वकील ही सिखलाते हैं। माननीय यमराज जी ! वकीलों की भीड़ के साथ इनके मुन्शी भी हैं, यह तो अपने और अपने वकील साहब को जेब भरने के लिये येन केन प्रकारेण मुवक्किल की जेब काटने की धुन में लगे ही रहते हैं।

इन की रिपोर्टों को देखने से पता चलता है कि एक मुन्शो तो बेचारे ग्रामीण अनपढ़ लोगों से चार आने के बजाय १६ आने चार नामों से लिया करता था। यह कहा करता था कि लाओ ! चार आने लिखवाई के, चार आने तहरीर के, चार आने मुन्शियाने के और ४ आने मेरे।

Scanned with CamScanner

नरकधाम में वकीलों और मुन्शियों की भीड़ पर यमराज महाराज बड़े चिन्तित हुए।

न्यायाधीश

वकीलों की तो नरक स्थान में भारी भीड़ है ही किन्तु न्यायाधीश भी अच्छी संख्या में आते रहते हैं। कितना भी अच्छा न्यायप्रिय न्यायाधीश हो, रिश्बत और सिफारिस पर भी ध्यान न देता हो तब भी उसे स्वर्गधाम जाने से पहले हमारे नरकधाम की हवा खानी पड जाती हैं। फिर उन न्यायाधीशों का तो कहना ही क्या जो आये दिन रिश्बत, सिफारिश और अपने क्रूर स्वभाव के शिकार है।

ऐसे अनेक न्यायाधीश यहां विराजमान हैं जो अपने क्रूर स्वभाव से बिचारे अभियुक्तों पर १००) दण्ड करते हैं और उस के गिडगिडाने पर १५०) और फिर गिडगिडाया तो बेचारे को दो सौ २००) रुपया दण्ड भोगना पडता है। मृत्युलोक में न्यायाधीश केवल फाईलों पर ही ध्यान देते हैं वास्तविकता का पता लगाने की न वे कोशिश करते हैं और न उन्हें कानून ही ऐसा करने देते हैं वे तो मिसल का पेट भरने पर ही ध्यान देते हैं इससे बड़े बड़े अनर्थ हुये हैं :—

मृत्युलोक की एक घटना है कि एक शहर कोतवाल की अपने सम्बन्धी चौ.रामसिंह से शत्रुता थी, कोतवाल ने कुछ डाकुओं से उस का नाम लिवा दिया। बेचारे चौधरी सेशन सुपुर्द कर दिये गये। चौधरी साहब को डाकुओं का साथ देने, डाका डालने और हथियार सप्लाई करने के लिए मिसल के पेट में भर दिया। बेचारे बेगुनाह चौधरी साहब सात वर्ष को जेल भेज दिये गये। यदि

Scanned with CamScanner

सेशन जज साहब केवल गवाहों पर ही आश्रित न रहते और सूक्ष्म दृष्टि से चौधरी रामसिंह की जांच करते तो सम्भव था कि जज साहब को मसीवाहिनी लेखनी उसे निरपराध ही घोषित करदेती किन्तु पता नहीं मृत्युलोक के न्यायाधीशों की न्याय संहिता कैसी है—यही चौधरी रामसिंह उच्च न्यायालय से बेदाग बरी हो गए ।

ऐसे भी अनेक न्यायाधीश यहां नरकधाम में पधारे हैं जिनके प्रमाद से बेचारे वादी-प्रतिवादी कई कई वर्षों तक न्यायालयों में धक्के खाते रहते हैं ।

न्यायाधीशों के न्यायालयों में काम करने वालों की घटनाएं सुनाना तो श्रीमान् ! आप का समय खराब करना होगा । इन के गुनाहों के कारनामे तो इतने हैं कि यदि वे सब लिख दिये जायें तो दिल्ली से लंदन तक लम्बे पृष्ठों का पोथा बन सकता है सारांश में इतना ही पर्याप्त है कि यह सारे के सारे पूरे समय के लिए इसी नरकधाम में रहने के लिये आते हैं ।

पत्रकार

माननीय यमराज जी ! हमारे नरकधाम में मृत्युलोक से आने वाले लोगों में पत्रकार भी है । यद्यपि पत्रकार किसी भी राष्ट्र के जागरूक पथ प्रदर्शक होते हैं किन्तु यदि इन पर लोभ सवार हो गया तो फिर यह लोग राष्ट्र के भयंकर शत्रु सिद्ध होते हैं । अधिक तो नहीं फिर भी बहुत से पत्रकार यहां आये हैं इनकी फाईलों से पता लगता है कि यह लोग भी समय बे समय अपनी जेबें गरम करते रहते हैं । चुनावों के अवसर पर इनकी अच्छी चांदी बनती है । चुनाव जीतने के अभिलाषी पहले इन्हीं का थड़ा पूजते हैं, इन्हें ही नमस्कार करते हैं और इन्हें ही प्रेस

Scanned with CamScanner

कान्फ्रेंस के नाम पर पार्टी खिलाते पिलाते रहते हैं। ऐसे भी कई धूर्त पत्रकार हमारी नरकपुरी में आये हैं जो विदेशियों से मिल जुल कर अपनी जेबें गर्म करते रहते थे इनकी ओर से अपना राष्ट्र जाय भाड़ में या चूल्हे में।

पत्रकार प्रायः सभी संस्थाओं पर छाये रहते हैं। आज के युग में प्रेस और प्लेटफार्म का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः प्रेस के बिना पत्र और पत्र के बिना प्रेस अधमरे से रहते हैं। हमारी नरकपुरी में वैसे तो सैकड़ों पत्रकारों के अभियोगों की फाईलें हैं किन्तु एक-दो उदाहरण देना ही इस समय पर्याप्त है:—

एक पत्रकार जी यहां आये हैं जो गोरक्षा पर भाषण देते और गोरक्षा पत्र निकालते थे। वास्तव में इन्हें न गऊ माता से प्रेम था और न उनकी रक्षा का ध्यान। यह तो अपनी जेबें भरने की धुन में रहते थे। इन का कार्यक्षेत्र हिन्दू राजा—महाराजाओं में था। अपने मासिक पत्रिका में किसी महाराजा का चित्र छापना और उनसे गऊ रक्षा के लिये चन्दा मांगना इनका पेशा था।

एक बार यह पंडित जी उदयपुर के महाराणा फतहसिंह की सेवा में उपस्थित हुए। अपनी आंखों में आँसू भरकर गऊओं की दयनीय दशा का मार्मिक वर्णन करते हुये धन की याचना की। महाराणा कट्टर गो ब्राह्मण भक्त थे, दयार्द्र होकर झट दस सहस्र मुद्रा भेंट करदी। दस सहस्र मुद्रा पाते ही इस गो रक्षक धूर्तराज पत्रकार ने अपने सभी दुर्व्यसनों को पूरा किया। इसे अन्त समय में मृत्युलोक में कफन भी नहीं मिला यहां नरकपुरी के यमदूत इस धूर्त को नग्नावस्था में ही लाये हैं।

धर्म के नाम पर, गो माता और भारत माताके नाम पर एवं जाति के

Scanned with CamScanner

नामपर चन्दा बटोरने वाले पत्रकारों की नरकापुरी में अच्छी खासी भीड़ है। एक और पत्रकार यहां आये हैं इनका पत्रकारी पेशा था धनी वर्ग से धन ऐंठना। एक बार नहीं अनेक बार यह पत्रकार जी! राजाओं के खिलाफ कुछ घटनाऐं छापते और उनसे रुपया ऐंठते रहते थे, रुपया ऐंठने के पश्चात् उनकी प्रशंसा के गीत गाते रहते थे एक बार इस पत्रकारजी ने एक दिन अपने पत्र में एक बड़ी ही घृणित घटना घड़ी :—

"लखनऊ के एक हकीम जी एक नवाब के यहां मेहमान थे। हकीम जी गये थे नवाब साहब का इलाज करने किन्तु दैव गति से नवाब के महल में ही हकीम जी की मृत्यु हो गई। "इस पत्रकार ने इस घटना को घड़ते हुये लिखा कि हकीम साहब, नवाब साहब के कमरे में ही आराम कर रहे थे और अचानक रात में ही मर गए। सवेरे डाक्टरों ने देखा तो हकीम जी के मल मार्ग से खून निकला हुआ था। जनता में तरह–तरह की अफवाहें हैं। हम जांच कर रहे हैं अगले अंक में पूरा विवरण देंगे।"

बेचारे नवाब साहब के मन पर इस सनसनीदार खबर का जो असर हुआ होगा वह तो नवाब साहब ही जाने किन्तु नवाब साहब ने इस पत्रकार को दो हजार रुपया देकर अपना पिंड छुडाना ही उचित समझा।

दो हजार रुपया खा पी कर इस पत्रकार जी ने अगले अंक में लिख मारा कि जांच करने पर पता चला कि हकीम जी बबासीर के पुराने रोगी थे।

एक और पत्रकारजी यहां पधारे हैं यह भी ऐसे ही पेशेवर पत्र-कार हैं इनकी एक घटना यह है :—

Scanned with CamScanner

एक बार एक नवाब के राज्य में हिन्दुओं ने अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा का आन्दोलन प्रारम्भ किया। देखते ही देखते हजारों हिन्दू जेल भेज दिये गये, जुर्माने हुए, कुर्किएं होने लगीं, कोड़ों और संगीनों की मार पड़ने लगी इधर यह सब कुछ हो रहा था उधर यह एक हिन्दू पत्रकार ऐसा था जिसने अपने पत्र में नवाब साहब की प्रशंसा के गीत गाने प्रारम्भ कर दिये। दो चार लेखों पर ही नवाब साहब से चार हजार रुपये ले मरे। इसीलिए तो इन्हें नरकपुरी की यातनाएं भोगने को मिली हैं।

एक और पत्रकार की फाईल हमारे कार्यालय में आई है और हमारे यमदूत इसे लेने के लिए चले गये हैं। यह पत्रकार पुराने पापी है। इनके एक साथी मनीराम जी ऐसे हैं जो इनसे जीवन भर काले कारनामें कराते रहे हैं और अन्त में नरकपुरी के दरवाजे तक साथ रहेंगे।

इन पत्रकार जी की कलम में जान है वाणी में ओज है और मस्तिष्क सही काम करता है। यदि यह अपने मस्तिष्क, वाणी और कलम से देश जाति और धर्म का भला ही भला करते तो सचमुच इन्हें स्वर्ग में पहली सीढी प्राप्त होती। स्वर्ग में तो यह अब भी जायेंगे किन्तु यहां नरकपुरी में बहुत दिन निवास के पश्चात्।

इनके अभियोगों की फाईलों से पता चलता है कि इन्होंने सदा अपने साथी सहयोगी, विद्वानों और देश के उच्च नेताओं की अपनी कलम से सदा पगड़ी उछाली है। यह पूरे पार्टीबाज रहे हैं। दो धड़ों को लड़ाने और स्वयं चौधरी बनने में यह एक नम्बर हैं। यह पार्टी के सामने देशधर्म और जाति की परवाह नहीं करते।

Scanned with CamScanner

रहते हैं। यह सदा अपने चापलूस बेईमानों के आश्रय दाता, चोरों के रक्षक हैं। ,जनता द्वारा दिए गए दान के करोड़ों रुपयों को इनके चापलूस उड़ाते रहते हैं यह देखते और जानते हुए भी अपने चापलूसों की पीठ ठोकते रहते हैं।

अपने इन कुकर्मों के कारण इन्हें यहां सीट मिली है। कहीं ये अपनी कलम का सदुपयोग करते तो जैसा मैंने ऊपर कहा था स्वर्ग की पहली सीढ़ी पर इनका पैर होता।

सिफ़ारशी

श्रीमान यमराज जी! हमारे धाम में हजारों ऐसे भी लोग आये हैं जो न्यायाधीशों से मिलते जुलते रहते हैं और झूठी सिफारशें करते रहते हैं।

इनमें अनेक लोग तो ऐसे हैं जिनका पेशा ही सिफारिश करने का है। दो चार रुपये लेकर ही सिफारिश करने पहुँच जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो चाय की एक प्याली पर ही सिफारिश करने का रोज़ा खोल बैठते हैं। किन्तु कुछेक ऐसे भी हैं जो रुपया लेकर नहीं किन्तु अपनी पार्टी बाजी के कारण सारा ज़ोर लगा कर भी सिफारिश करते रहते हैं। ऐसे लोगों में एक श्री रामलाल जी हैं जिन्हें सिफारश करने पर हाईकोर्ट के सामने गिड़गिड़ाकर क्षमा याचना करनी पड़ी और इन्हें क्षमा मिल भी गई। किन्तु श्रीमान यमराज जी! किए हुए पाप क्षमा मांगने से नष्ट नहीं होते, चाहे मृत्यु लोक के हाईकोर्ट ने क्षमा दे दी किन्तु इस प्रकार के पाप कर्मों को भोगने के लिए ही तो श्रीमान की नरकापुरी है। इस प्रकार के पापी जीवों को तो यहां आना ही पड़ता है।

Scanned with CamScanner

ऐसे सिफारशी मृत्युलोक से भारी संख्या में यहां आ रहे हैं इनका भी तो प्रबन्ध होना ही चाहिए।

जमानती

आश्रयदाता जी! हमारी नरकपुरी में ऐसे भी लोग आये हैं जो जमानत देने का पेशा करते हैं। यह लोग किसी एक मकान के कागजात लेकर न्यायालयों में घूमते रहते हैं दस, बीस, पचास रुपया लेकर जमानत देते रहते हैं और फिर दूसरी पेशी पर जमानत केन्सिल करने की धमकी देकर मनमाना रुपया ऐंठते रहते हैं। ऐसे लोगों पर न कोई कानून लागू और न कोई अंकुश।

ओथ कमिशनर

मृत्यु लोक के न्यायालयों के अहातों में ओथ कमिश्नरों की भी भीड़ रहने लगी है। यह लोग बयान हलफी कागज पर आठ आने में ही सत्य होने की मुहर लगा देते हैं। जैसे, पहले गया और हरद्वार के पण्डे कुछ पैसे लेकर पितरों को स्वर्ग भेजने का संकल्प पढ़ते थे ऐसे ही आज न्यायालयों में केवल अठन्नी पर सत्यता की मुहर लगाने वाले इन ओथ कमिश्नरों की मृत्यु लोक में भरमार है। यहां तक ही नहीं, किसी को अपने बालक को स्कूल में प्रवेश करना है तो केवल एक अठन्नी ही उसकी आयु प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त है सारांश यह है कि मृत्यु लोक में केवल एक अठन्नी ही किसी को भी सच्चा सिद्ध करने का सर्टिफिकेट है।

इन बेचारे ओथ वालों को किसी के आवेदन पत्र के सच झूठ

Scanned with CamScanner

से क्या ! इन्हें तो अठन्नी का ध्यान है। तभी तो इन्हें भी नरक-पुरी का द्वार देखना पड़ रहा है। पर इसमें इनका दोष नहीं–कानून ही ऐसा है।

विभिन्न व्यापारी

नरकराज जी ! अपनी नरकपुरी में आने वाले भारी संख्या में व्यापारी लोग भी हैं। इनकी फाईलों को देखने से हजारों प्रकार के अभियोग इन पर हैं। सारे अभियोगों को लिखना तो बड़ा कठिन है कुछेक उदाहरण दे देता हूँ।

बोल चाल में अनैतिकता

१—एक बात प्रायः सारे दुकानदार ग्राहकों से कहते रहते हैं। "इसमें हमें कौड़ी का भी लाभ नहीं। घाटे से बेचना पड़ रहा है। सवेरे सवेरे आपकी बोहनी करनी है। दाम के दाम आपको माल बेच रहे हैं। चलो ! सैलटेक्स भी हम अपने पास से ही दे देंगे। जो साड़ी आपको तीस रुपये में दे रहा हूँ वो बाजार में चालीस से कम में नहीं मिलेगी। हम तो थोक व्यापारी हैं आपकी बोहनी करने के लिए ही एक साड़ी आपके हाथ बेच रहा हूँ अन्यथा हमारे यहां सैंकड़ों हजारों साड़ियां दुकानदार लोग ले जाते हैं।

२—एक व्यापारी पहले गरीब था फिर मालदार हो गया। किन्तु वाणी का बड़ा गन्दा था। जिन व्यापारियों से देन-लेन करता उनसे ही बात बात में लड़ता भिड़ता रहता था और प्रायः कह देता था साला दिवाला निकाल भागेगा अड़ौसी-पड़ौसी इसे समझाया करते थे कि ऐसी बुरी बात किसी को कहना अच्छा नहीं–भगवान को भी ऐसा कहना बुरा लगता है। किन्तु इस व्यापारी की आदत

Scanned with CamScanner

ठीक नहीं हुई अन्त में इसका मृत्युलोक में ही दिवाला निकल गया और अब इसे यहां नरक भोगना पड़ रहा है।

३—एक व्यापारी ग्राहकों पर असर डालने के लिए प्रायः कहा करता था। अगर आपसे अधिक पैसे लूं तो गाय खाय।

इस वाणी से बेचारे भोले भाले गोरक्षक हिन्दू इसके वाक्-जाल में फंस जाते थे। उन्हें क्या पता था कि इसने घर पर गाय रखी हुई है इसका भाव है कि अगर आपसे पैसे अधिक लूं तो गाय खाय अर्थात् मैं नहीं। वाणी की इस चालाकी के अपराध में ही यह सेठजी यहां नरक में निवास कर रहे हैं।

४—एक और मियां जी जूतों की दुकान करते थे। यह प्रतिदिन प्रातः चार पैसे की कचौरी खाकर दुकान पर बैठते थे। ग्राहक जूते का दाम पूछता तो गम्भीर मुद्रा में दुगने दाम बता देते ग्राहक ने कुछ कमी करने की बात कही तो गरज कर बोलते कि मियां! सबेरे-सबेरे का वक्त है चार पैसे से ज्याहदः खाये हों तो सूअर खाया हो। ग्राहक गण इस शपथ के प्रभाव में फंस कर लुटते रहते थे। इसी प्रकार के वाणी के चालाक व्यापारियों की यहां नरक धाम में बहुत भीड़ है।

मिलावट करने वाले

मिलावट करने वाले व्यापारियों की तो गणना करना ही कठिन है फिर भी कुछ संक्षिप्त घटनायें ही यहां पर्याप्त हैं।

१—एक व्यापारी मिर्चों में मूंगफली के छिल्के और हल्दी में सेलखड़ी मिट्टी मिलाकर धन पैदा करता था।

२—एक मिट्टी के तेल के व्यापारी की फाईलों से पता

Scanned with CamScanner

चलता है कि इसने मिट्टी के तेल में पानी मिला कर धन संग्रह किया था।

एक खल बेचने वाला व्यापारी खल की हजारों बोरी मंगाता था फिर उसे कोल्हू में डाल कर उसमें चावल की भूसी मिलवा कर फिर खल बनाकर बेचता था। इस पापी ने पशुओं के खाद्य पदार्थ (खल) में भी मिलावट करके हजारों रुपया कमाया। इसी कारण इसे भी नरक में घोर यातनाएं सहनी पड़ रही हैं।

घी में मिलावट

घी में मिलावट करने वाले भी बहुत अधिक संख्या में यहां नरकपुरी में आये हैं। इनके कर्मों के लेखे जोखे देखने से पता चलता है कि इनमें बहुत से तो ऐसे हैं जो शुद्ध घी में अरबी उबाल कर मिलाते रहे, कुछ ऐसे हैं जो आलू उबाल कर मिलाते थे। कुछ ऐसे भी हैं जो पशुओं की चरबी मिलाते थे। किन्तु अब जितने लोग मृत्यु लोक से आ रहें हैं वो तो सारे के सारे शुद्ध घी में मूंगफली का तेल और कोकोजम मिलाते रहते हैं। बहुतेरे ऐसे भी लोग आ रहे हैं जो शुद्ध मक्खन में भी मिलावट करते थे।

इनके साथ ही वे सरकारी इन्स्पेक्टर भी बहुत आये हैं जो रिश्वत लेकर मिलावट करने वालों को शुद्ध घी का प्रमाण पत्र देते रहे हैं।

पंसारी और पापड़ वाले

ऐसे भी पंसारी और पापड़ वाले हमारी नरक पुरी में आये

है जो धनिये में गधे की सूखी हुई लीद और काली मिर्चों में पपीते के बीज मिलाते रहे हैं तथा पापड़ वाले पापड़ में काली मिर्चों के स्थान पर उड़द की दाल का काला छिलका लगाते थे।

दूध वाले और दूधिये

हमारी नरकपुरी में दूध बेचने वाले दूधिये और दुकानदार दोनों ही हजारों की संख्या में आये हैं तथा नित्य आ रहे हैं इनकी फाईलों से पता चलता है कि इन्होंने अपनी जेब भरने के लिये जनता का स्वास्थ्य बिगाड़ने का तो मानो ठेका ही लिया हुआ है। इनके जुर्मों के प्रकार निम्न हैं–

१—गाय-भैंस का इतना अधिक दूध दुह लेते हैं कि जिससे उनके बच्चे भूख से तड़फ-तड़फ कर मर जाते हैं। विशेष तया भैंसों के कटड़े और गऊओं की बछिया।

२–दूध बेचने के लिये जब नगरों में जाते हैं तब मार्ग में दूध पी जाते हैं और उसे गन्दे तालाब के पानी से पूरा करते हैं। दूध छानने पर अनेक बार छोटे २ मेंढ़क और मछली भी निकल आती है।

३–हलवाई लोग दूध में अरारोट और ब्लाटिंग पेपर आदि मिला देते हैं जिससे दूध पर मोटी मलाई जैसी तह जम जाती है।

~~४–दूध में~~ सपरेटा (मक्खन निकला हुआ दूध) मिला कर बेचते हैं।

५—दूध के ऊपर जमी हुई मलाई को भी बेच देते हैं।

६–एक दूध वाला किसी कोठी में दूध देने गया। कोठी के दरवाजे में टट्टी थी यह दूध वाला चुपके से टट्टी में घुस गया और

उसमें रखे पानी को दूध में मिला दिया। यह घटना मकान वाले ने देख ली और खूब मरम्मत की। अन्त में बेचारे को यहीं नरक में आना पड़ा है।

इसी प्रकार अनेक कारणों से दूधियों और हलवाइयों को हमारी नरकपुरी में आना पड़ा है।

वस्त्र निर्माता

हमारी नरकपुरी में वस्त्र निर्माता भी अच्छी संख्या में आये हैं। इन पर अनैतिकता के जहां अनेक अभियोग हैं वहां इन्होंने अपने वस्त्रों के नाम भी घृणित रखने प्रारम्भ कर दिये। यथा– मेरी तेरी राजी, आधी रात पहर का तड़का, दिल की प्यास, तथा सिनेमा अभिनेत्रियों के नाम रख लिये हैं।

इन नामों में दूषित भावना छुपी हुई है जो नैतिकता के विपरीत है। इसी तथा अन्य कारणों से यह लोग नरकपुरी में आये हैं। ऐसे भी मिल वाले नरकपुरी में आये हैं जिनका कोई भी कपड़ा पूरा नहीं उतरता। धोती जोड़े पर छापते हैं १० गज उतारता है ९॥।, लट्ठे पर लिखते हैं ४० गज और होता है ३८॥।,

वाक् शूर

बहुत से ऐसे भी हमारी नरकपुरी में आये हैं जो वाणी के व्यभिचारी थे। वाणी से दूसरों को ठगना, धोखा देना, वाणी की लपेट में दूसरों को फंसाना इनका काम रहा है।

एक पुस्तक विक्रेता बड़े ही वाक्शूर थे। भोले-भाले ग्राहकों

को फंसाना तो इनके लिए बड़ी बात थी ही नहीं, किन्तु यह तो पढ़े लिखों को भी अपने वाक्जाल में ऐसे फंसा लेते थे जैसे मछियारे जल में से मछली को। इनके जीवन में यह एक घटना सैकड़ों बार आई है कि जब किसी ग्राहक ने इनसे बम्बई की रामायण मांगी तो झट उन्होंने बनारस की दिखा दी।

भोले ग्राहक ने पूछा कि असली बम्बई की है, इन्होंने झट से कह दिया क्या मजाल है ? हो तो वापिस कर देना। बस वाणी के चक्करदार चक्कर में यह ग्राहकों को फंसाते रहते थे। और पुस्तकों के नाम, भाव, और भाषा बदल कर अपने काम को चलाते रहते थे।

इस प्रकार के कारनामों से यह तथा इन जैसे हजारों व्यक्ति [illegible] पुरी में भी विराजे हैं।

लेखक गण

[illegible] गण भी अच्छी संख्या में आये हैं। जिनका काम लेखों की चोरी करना, समाज का वातावरण दूषित करने वाले अश्लील साहित्य लिखना, स्त्री-पुरुष की वासनाओं को कुमार्ग पर घसीटने वाले घृणित कोकशास्त्र आदि लिखना, युवकों को पथ भ्रष्ट करने [illegible] दूषित गाने और कहानियां लिखने में यह लोग तत्पर रहे हैं। राष्ट्र को रसातल में ले जाने वाले ऐसे लेखक लोग यहां भारी संख्या में है।

प्रकाशक गण

हमारी [illegible] में [illegible] प्रकाशकों की भी कमी नहीं

है। यह लोग भी आये दिन अनेक अपराध करते रहते है। बेचारे लेखकों को या तो पैसा देते ही नहीं अथवा देते भी है तो रुला-रुला कर, वह भी पूरा नहो। फिर दो हजार प्रकाशित करने का निश्चय करके चुपके से पांच हजार छाप लेते हैं। दूसरी बार छाप कर भी प्रथम बार ही लिखना इनका काम रहा है।

ऐसे भी प्रकाशक है जो किसी लेखक और प्रकाशक की पुस्तक को चोरी से ज्यों की त्यों छाप कर बेच खाते हैं। मृत्यलोक के न्यायालय इन पर अभियोग सिद्ध करने में भी प्रायः असफल हो रहे हैं।

धक्का देने वाले

माननीय यमराज जी! आपकी नरकपुरी में ऐसे भी लोगों की भारी भीड़ है जो मृत्यु लोक से आये हैं। इन लोगों का अपराध यही है कि यह लोग रेलों में, बसों में, लारियों में, स्टेशन और सीनेमाओं में टिकट लेते हुए दूसरों को धक्का देकर आप आगे बढने का यत्न करते रहते हैं। ऐसे लोगों से अनेक बार भयंकर काण्ड होते रहे हैं कभी कभी तो इनकी करतूतों से अनेक जन मृत्यु के घाट उतर जाते हैं।

एक बार, एक बूढा यात्री रेलवे से नीचे उतर रहा था तो चढने वाले ने चढ़ने की जिद की और क्रोध के वश होकर उस शीघ्र चढ़ने के इच्छुक युवक ने बेचारे बूढे को धड़ाम से नीचे धक्का दे आप रेल में बैठ चल दिया। बूढे के सिर में खून की धारा बहने लगी।

स्टेशन मास्टर ने देखा कि किसी यात्री को चोट आ गई है

उसने तुरन्त उसे हस्पताल भेज दिया। जहां वह दो तीन घंटे के पश्चात् मर गया।

इस प्रकार की घटनाएं प्रायः होती रहती हैं। धक्कम धक्का से आगे बढ़ने वाले उतावले लोगों के कारण बेचारी देवियें और बच्चे अनेक बार कष्ट पाते रहते हैं।

लीडर या शासक

श्रद्धेय यमराज जी ! आप के नरक में लीडरों की सब से अधिक भीड़ हो रही है। पचास-साठ वर्ष पूर्व लीडर नाम का कभी कोई व्यक्ति आ टपकता था किन्तु अब तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे समस्त विश्व के प्राणी लीडर बनने की धुन में मस्त होकर यहां [illegible] की तय्यारी कर रहे हों।

लीडर की विविध-विचित्र लीलाओं का वर्णन करना बड़ा भारी काम है मेरा अनुमान है कि यदि लीडरों के कर्मों की जांच करने के लिये एक लाख जांच समिति बनाई जांय तो एक लाख वर्ष में भी यह जांच समितिऐं जांच का काम पूरा नहीं कर [illegible]गी। इनके कर्मों के जो लेखे यहां आ रहे हैं उनका अध्ययन सिद्ध करता [illegible]। लीडरों के कर्मों की घटनाऐं बड़ी ही विस्मयोत्पादक और वीभत्स तो हैं ही साथ ही मनोरंजक भी है।

श्रीमान ! लीडरों के कर्मों का हाल सुनने की इच्छा हो तो इस प्रसंग से नहीं-फिर कोई समय प्रदान करें-तब उनकी फाईलें सिलसिले वार सुनाता रहूंगा। अब तो सारांश में इतना ही सुनें—

पहले नरकधाम में मुट्ठी भर राजे-महाराजे आते रहते थे वह भी थोड़े समय के लिये। किन्तु आज तो मृत्युलोक से नेता शासकों की ट्रेनें भरी आ रही है। क्योंकि मृत्युलोक में राजे महाराजे थे ही मुट्ठी भर। किन्तु अब तो नेताओं का युग है कोई भी ऐसा नेता न मिलेगा जो किसी न किसी प्रकार राज सिंहासन पर न बैठा हो। एक २ नेता को तो राजसिंहासन पर बैठने के लिये कई-कई बार अवसर मिलते हैं फिर जब अवसर नहीं मिलता तब दूसरी पार्टियों में मिलकर उसी उधेड़ बुन में लग जाते हैं। सारांश में यही है कि राजसिंहासन पर विराजमान होने की लालसा में अनेकों प्रकार के षडयन्त्र करते रहते हैं फिर अपनी कुरसी की पुष्टि के लिये जनता का उल्लू बनाते फिरते हैं।

माननीय यमराज जी ! मृत्युलोक में यह नेता-शासक लोग क्या २ करते होंगे इसका अनुमान इससे ही लग जाता है कि यहां आपकी नरकपुरी में भी इन्होंने अपनी एक यूनियन बनाली है और एक प्रस्ताव द्वारा श्रीमान से इन्होंने अनुरोध किया है कि जैसे मृत्युलोक में हमारे आते-जाते समय मार्ग में चप्पा-चप्पा भूमि पुलिस मैन खड़े रहते थे-ऐसे ही यहां पर भी हमारा वही मान और मान होने के साथ नरकपुरी के राज प्रबन्ध में हमारा हाथ होना चाहिये।

अध्यापक

माननीय नरकराज जी ! आप आश्चर्य करेंगे कि आपकी नरकपुरी में आने वाले प्राणियों में अध्यापक लोग भी हैं। अधिक तो नहीं

Scanned with CamScanner

का आपरेशन कर दिया। बेचारे महात्मा जी आपरेशन घर में ही दम तोड़ बैठे। एक रोगी को कान के पास दर्द था उनका भी आपरेशन कर दिया गया। बेचारे रोगी को घर के दर्शन भी नसीब नहीं हुए। एक डाक्टर ऐसा भी आया है जो हर रोगी को पेन्सिलीन का इन्जेक्सन देता रहता था परिणाम स्वरूप अनेक रोगी अन्य भयंकर रोगों में फंस जाते थे। एक डाक्टर ज्वर में कुनैन दिया करता था। एक रोगी को कुनैन अधिक दी गई और वह रोगी पागल हो गया। वैद्यों की औषध से वर्षों में ठीक हुआ।

माननीय नरकराज जी! डा[illegible] के अभियोगों की फाइलें बहुत ही हैं इतने से ही अनुमान कर लेना पर्याप्त है। नरकराज जी के मन पर आ[illegible] के चिकित्सा शास्त्रियों की घटनाओं को सुन कर बुरा प्रभाव पड़ा।

माननीय यमराज जी! नरक पहली रिपोर्ट का यह संक्षिप्त सा वृत्तान्त तय्यार कर लिया है। शेष फिर तय्यार कर दूंगा। प्रति मास या प्रति वर्ष प्रकाशनार्थ भेजता रहूँगा। सम्भव है इस छोटे से विवरण से मृत्यु लोक के निवासियों के आचार व्यवहार में कुछ सुधार हो सके। नरकाधिपति यमराज महाराज ने अपने मुख्य लेखक चित्रगुप्त को इस परिश्रम के लिए धन्यवाद दिया और इसमें कुछ सुधार करने की ओर ध्यान भी दिलाया, जो अगले संस्करण में ठीक कर दिया जावेगा।

आचार्य धर्मवीर आर्य, मुम्बई

Scanned with CamScanner